विश्वरतन! अनमोल रतन! हे,अष्टरतन अधिकारी!

स्वीकारो ये भावभीनी श्रद्धाञ्जलि हमारी!

विलुप्त हो गया वो ध्रुव तारा, सूना सा पड़ा आकाश

दादाजी अब नहीं रहे – सहसा होता न विश्वास।

प्यारे मातपिता के अतिशय प्यारे, रतन निराले

महायज्ञ के हे याज्ञिक! हे रक्षक! हे रखवाले!

ब्राह्मणकुलभूषण, पाण्डवदल–अग्रज, शोभित ये फुलवारी

विश्व रतन! अनमोल रतन! हे, अष्ट रतन अधिकारी।

कल्प वृक्ष का चतुर चितेरा! खींची सृष्टि रेखा

अष्ट रत्नों में बैठ, जड़ों को सींचते सब ने देखा।

सिन्ध प्रान्त का आदि समर्पित यज्ञ में प्रथम कुमार।

पद चिन्हों पर चले–चलेंगे भावी कोटि कुमार।

उदाहरण बन चलन से सबको दिखलाया साकार

बतलाया कि कैसे हों संकल्प–वचन–व्यवहार।

ऋषि दधीचि तुम रुद्र यज्ञ में स्वाहा हुए सहर्ष

कितने दधीचि ऋषियों के हित बने अनुपम आदर्श।

विश्वासपात्र आज्ञाकारी बन हृदय प्रभु का जीता
आदि से लेकर अन्तिम क्षण, पल-पल सेवा में बीता।

एकनामी, एकॉनामी, ऐक्युरेट, एलर्ट
रेगुलर और पंक्चुअल, हर सेवा में एक्सपर्ट।

'बाबा मेरे बाजू में बैठा, सब देख रहा है
लेखराज सारे कर्मों का लेखा लेखरहा है।'

शीतल-शान्त-सरल दादाजी मुस्काते मिलते थे
नहीं जोर से हंसना सबको समझाते रहते थे।

छपा हृदय में दृश्य वही वह बैठना अमृत वेला
डटा रहा वह वैरागी, पुरूषार्थी, एकांत-अकेला।

सच्ची श्रद्धाञ्जलि है सेवा आप सी कर दिखलायें
बाप समान बनें पहले हम आपसा ही बन जायें।

शीश शिरोमणि! चमकोगे है जब तक धरा-गगन
भूल सकेंगे कभी न तुमको, दादा विश्वरतन !!